DOON UNIVERSITY
NEWSPAPER CLIPPING SERVICES

सम्मेलन | उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्मेलन का दूसरा दिन, चौथा सत्र भारतीय ज्ञान परंम्परा संस्कृत एवं विज्ञान पर आधारित

संस्कृत कर्मकांड ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान की भी भाषा

- सम्मेलन के दूसरे दिन वक्ताओं ने संस्कृत का महत्व बताया
- वक्ताओं ने कहा, भारत विश्व गुरु था और आगे भी रहेगा

देहरादून,कार्यालय संवाददाता। संस्कृत केवल कर्मकांड की भाषा नहीं, बल्कि यह ज्ञान और विज्ञान की भाषा भी है। भारत विश्वगुरु था, है और रहेगा। शुक्रवार को उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) की ओर से दून विवि में आयोजित उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्मेलन-2024 में वक्ताओं ने यह बात कही। उन्होंने संस्कृत भाषा का इतिहास और महत्व बताया।

इस सम्मेलन का चौथा सत्र भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत एवं विज्ञान विषय पर शुरू हुआ, जिसका शुभारंभ संस्कृत विवि हरिद्वार के प्रोफेसर गुरु राणे ने किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत और भारतीय संस्कृति के माध्यम से भारत ने हमेशा विश्व को ज्ञान का प्रकाश दिया। प्रो. पीबी सुब्रह्मण्यम ने कहा कि भारत विश्वगुरु था, है और रहेगा। उन्होंने कहा कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। वेद स्वयं में सत्य हैं, उन्हें खोजना नहीं, बल्कि उनके माध्यम से सत्य को समझना जरूरी है। वेद आकाश के समान अनंत और असीमित हैं। इस दौरान डॉ. वैशाली गुप्ता, आचार्य प्रो. सिद्धयुमन और यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत भी मौजूद रहे। समन्वयन दून विवि के डॉ. सुधांशु जोशी ने किया। यूकॉस्ट के अरुण त्यागी, विनोद ओझा, अभय सक्सेना ने सक्रिय भूमिका निभाई।

दून विवि में शुक्रवार को आयोजित उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्मेलन को यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत ने संबोधित किया।

भावनात्मक सहनशीलता जीवन की चुनौतियों का सामना करने का है महत्वपूर्ण साधन : पंत

यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत ने कहा कि भावनात्मक सहनशीलता जीवन की चुनौतियों का सामना करने के साथ विपरीत परिस्थिति में घबराहट से बचने का महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने मन और शरीर के रिश्ते पर फोकस किया। उन्होंने बताया कि भावनात्मक असंतुलन कैसे शारीरिक लक्षणों के रूप में प्रकट होता है। उन्होंने सिलक्यारा अभियान का उदाहरण दिया। वे भावनात्मक सहनशीलता के निर्माण एवं भावनात्मक अनुकूलता के कला-विज्ञान पर आयोजित सत्र में बोल रहे थे। प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. सीएनआर राव और उनकी पत्नी इंदुमति राव ने वर्चुअली इस सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान डॉ. जयश्री, उड़ान सोसायटी नई दिल्ली से राधिका जैन, राधा भट्ट मौजूद रहे।

विश्व की प्राचीनतम भाषा है संस्कृत

वक्ताओं ने कहा कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, इसमें भारतीय संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित होती रही है। वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र जैसे ग्रंथों में वैज्ञानिक विषयों पर गहन विवेचन मिलता है। संस्कृत वाङ्मय में गणित, खगोल विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, आयुर्विज्ञान, कृषिविज्ञान, पर्यावरण और सैन्य विज्ञान जैसे विषयों का गहरा ज्ञान निहित है। संस्कृत भाषा में सभी विद्याओं और कलाओं का भंडार है।

दून विश्वविद्यालय में शुक्रवार को आयोजित उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्मेलन में मौजूद अतिथि।

News paper – Hindustan
Date - 30.11.2024